# परी कथा

टोनी

# परी कथा

ब्लाक्लावा स्ट्रीट के निकट स्थित कारखाने की बड़ी घड़ी में चार बजे थे.

चाय के लिए अभी एक घंटा बाकी था और बैस्सी ऊब चुकी थी. जो किताब वह पढ़ रही थी वह भी मनोरंजक न थी, किताब परियों के बारे में थी.

“परियाँ! उनमें इतनी समझ अवश्य है कि यहाँ आसपास नहीं रहेंगी,” बाहर सुनसान, उदास गली को देखते हुए उसने सोचा. “किताबों में मनगढ़ंत बातों के बजाय सच्ची बातों के बारे में क्यों नहीं लिखा जाता?” बाहर वर्षा धीमी हो रही थी और घने, काले बादलों के बीच से प्रकाश की पीली किरणें दिखाई दे रही थीं. कहीं दूर एक पक्षी गाने लगा था.
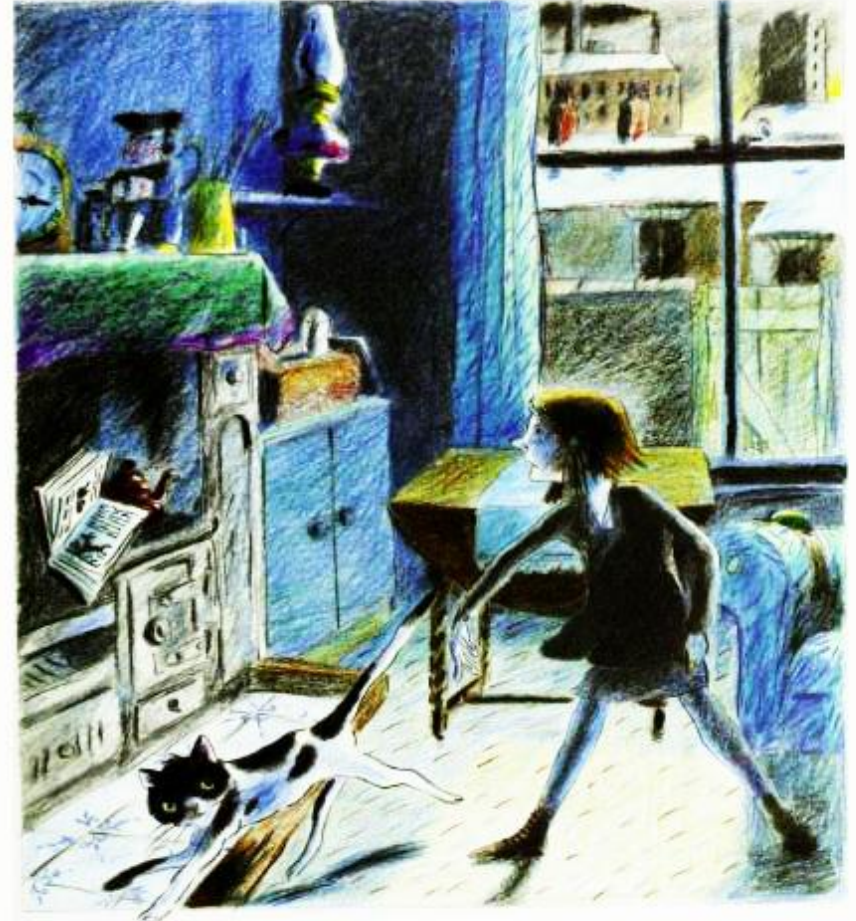
बैस्सी बाहर अहाते में जा कर गेंद से खेलने लगी. वह गेंद उछाल रही थी, ऊँचा और ऊँचा, फिर बहुत ऊँचा. तभी गेंद दीवार के एक दूसरी ओर गायब हो गई. कचड़े के डोल पर चढ़ कर बैस्सी ने दीवार के दूसरी तरफ देखा.

अगले घर का अहाता भी उनके अहाते जैसा ही था बस इतना फर्क था कि हर चीज़ विपरीत दिशा में थी. दीवार चढ़ कर बैस्सी दूसरी ओर चली गई. उसे कुछ अजीब लग रहा था, जैसे कि वह किसी दूसरे देश में थी.

अचानक एक वृद्ध महिला ने पिछला दरवाज़ा खोला. बैस्सी घबरा गई और अपनी गेंद के बारे में बताने लगी. वृद्ध महिला मुस्कराई और उसने पूछा कि उसकी माँ घर कब वापस आती थी.

“पाँच बज कर दस मिनट पर, मिस,”

“फिर थोड़ी देर भीतर आ जाओ,” वृद्ध महिला ने मुस्कराते हुए कहा. “मेरा नाम मिसेज़ लीफ है और मैं जानती हूँ कि तुम बैस्सी हो.”
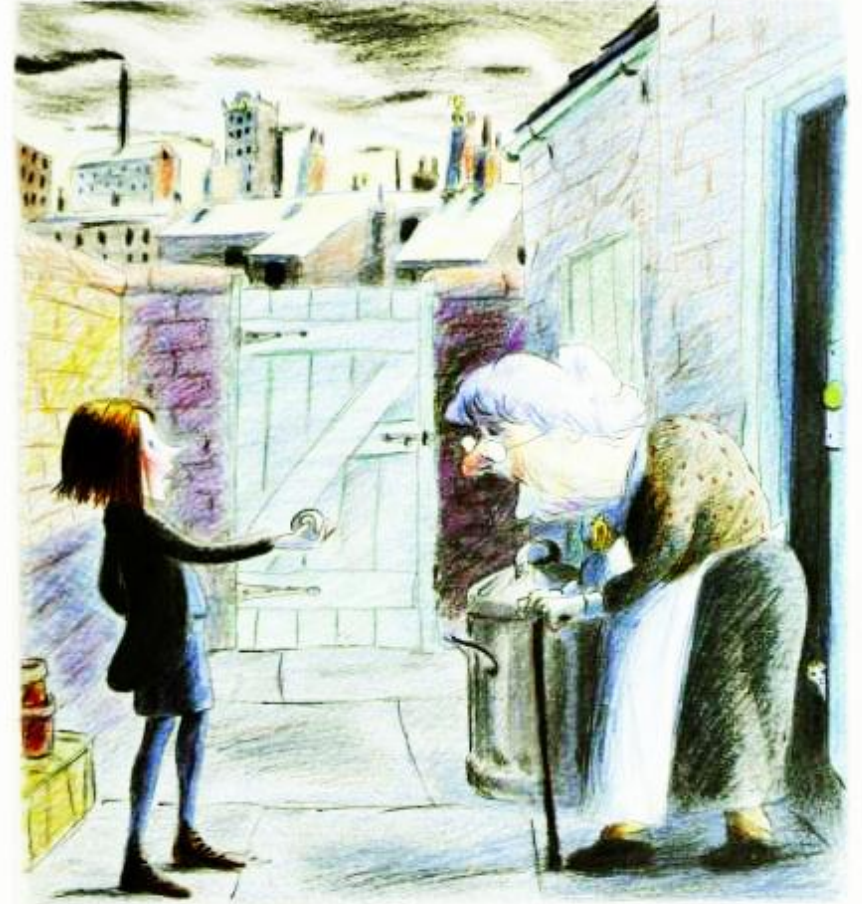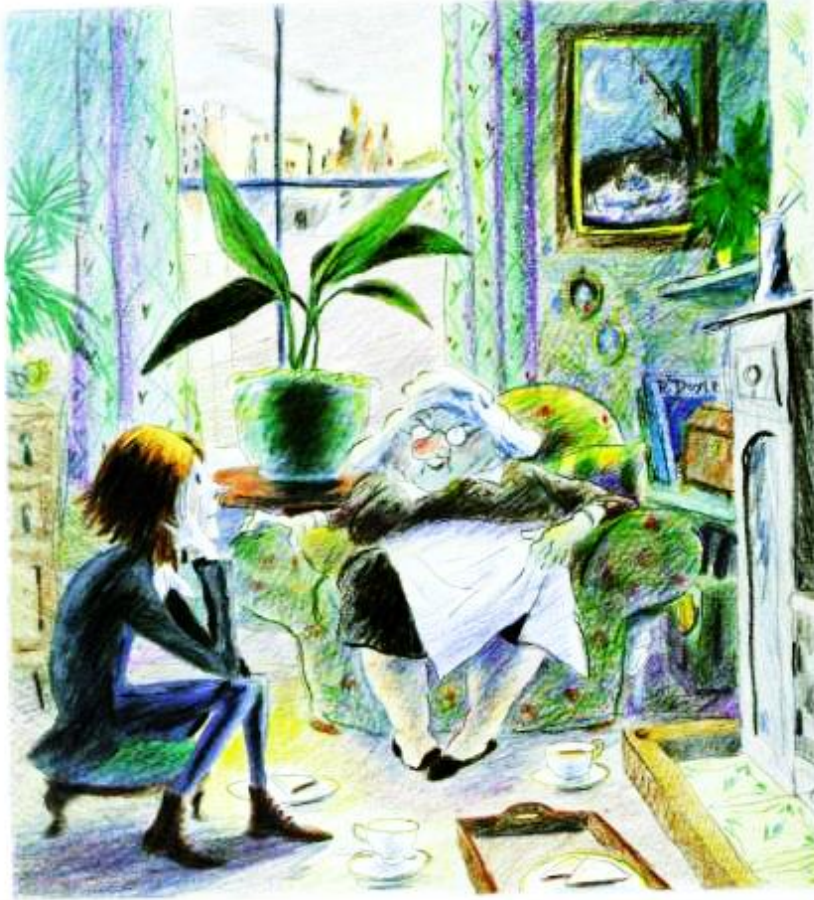
जब चाय और मक्खन लगी ब्रैड खाने के लिए वह बैठे तो बैस्सी सोचने लगी कि वृद्ध महिला उसका नाम कैसे जानती थी. फिर उसने अपनी किताबों के बारे में बताया जो मनोरंजक न थीं.

“तुम्हें परियों में विश्वास नहीं है”?

“नहीं!” बैस्सी में कहा. “जादू नाम की कोई चीज़ नहीं होती.”

“अपनी बात को सिद्ध करो,” मिसेज़ लीफ ने कहा.

बैस्सी हँसने लगी. “इस बात को सिद्ध नहीं किया जा सकता. आप सिद्ध करें कि जादू होता है.”

मिसेज़ लीफ आराम से बैठ गईं. “क्या कभी तुमने किसी जादुई पल का अनुभव किया है?” उन्होंने कहा. “किसी गर्मी की दुपहर में जब आकाश इतना नीला था कि सब कुछ थम सा गया हो या क्रिसमस के पहले की रात जब तुम्हें सब कुछ प्रसन्नता से भरा दिखाई दिया हो?”

“अवश्य हुआ है,” बैस्सी ने कहा.

“यही तो है,” मिसेज़ लीफ हँस दीं. “जिस बात को तुम समझ नहीं पाती उस की कभी उपेक्षा नहीं करो...अरे, मैं स्वयं ही एक परी हो सकती हूँ.”

चूंकि अगला दिन शनिवार था, बैस्सी को खर्च करने के लिए एक पैनी मिली थी. मिठाई लेने के लिए वह लीच की दुकान में गई. मिसेज़ लीफ वहाँ काउंटर पर बैठी बातें कर रही थीं, दोनों साथ-साथ पैदल घर आये.

"जब आपने कहा था कि आप एक परी हैं तो आप मज़ाक कर रहीं थी न," बैस्सी ने हँसते हुए कहा.

"क्यों?" मिसेज़ लीफ ने पूछा.

"क्योंकि परियाँ छोटी और सुंदर होती हैं," बैस्सी ने कहा.

"वह वैसी हो सकती हैं," मिसेज़ लीफ बड़बड़ाईं. "लेकिन फिर, वह बूढ़ी और बदसूरत भी हो सकती हैं. यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह कैसा महसूस करती हैं. जब वह उदास होती हैं तो वह भद्दी लगती हैं लेकिन जब वह प्रसन्न होती हैं तो वह इतनी कोमल होती हैं कि हवा में तैरती सी लगती हैं."

"अगर आप परी हैं तो फिर आप," बैस्सी ने कहा, "बहुत उदास परी होंगी." फिर अपनी अशिष्टता छिपाने के लिए वह झट से आगे बोली, "क्या हम कल फिर मिल सकते हैं?"

"अवश्य," मिसेज़ लीफ ने मुस्कराते हुए कहा, और घर का प्रवेश द्वार बंद कर लिया.
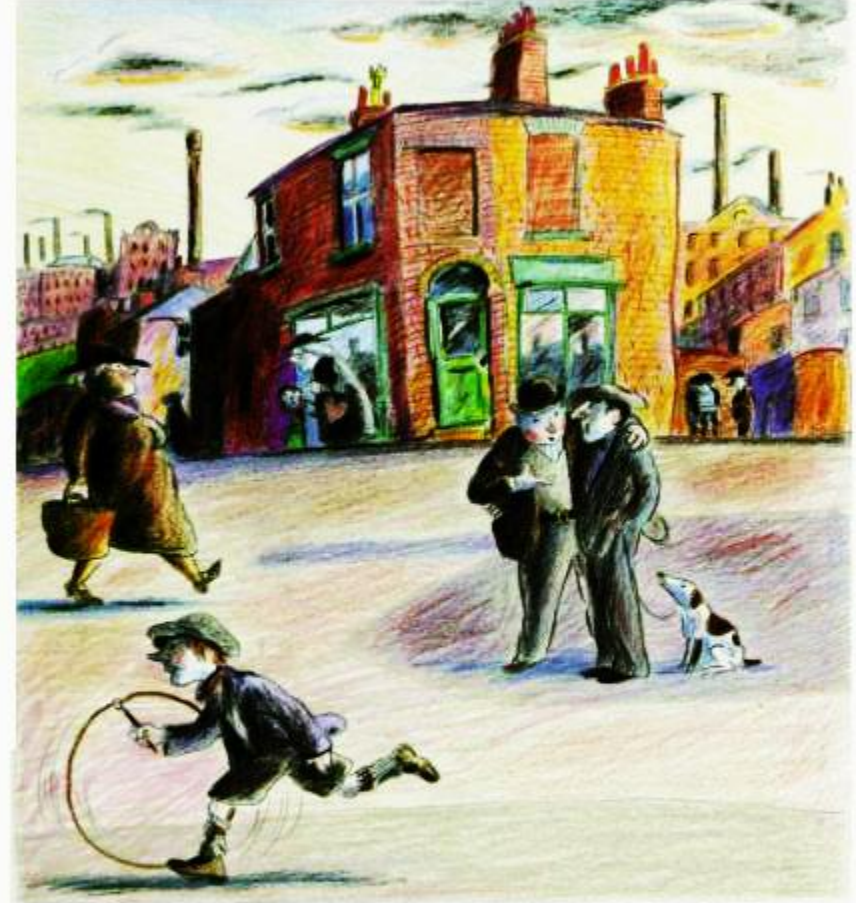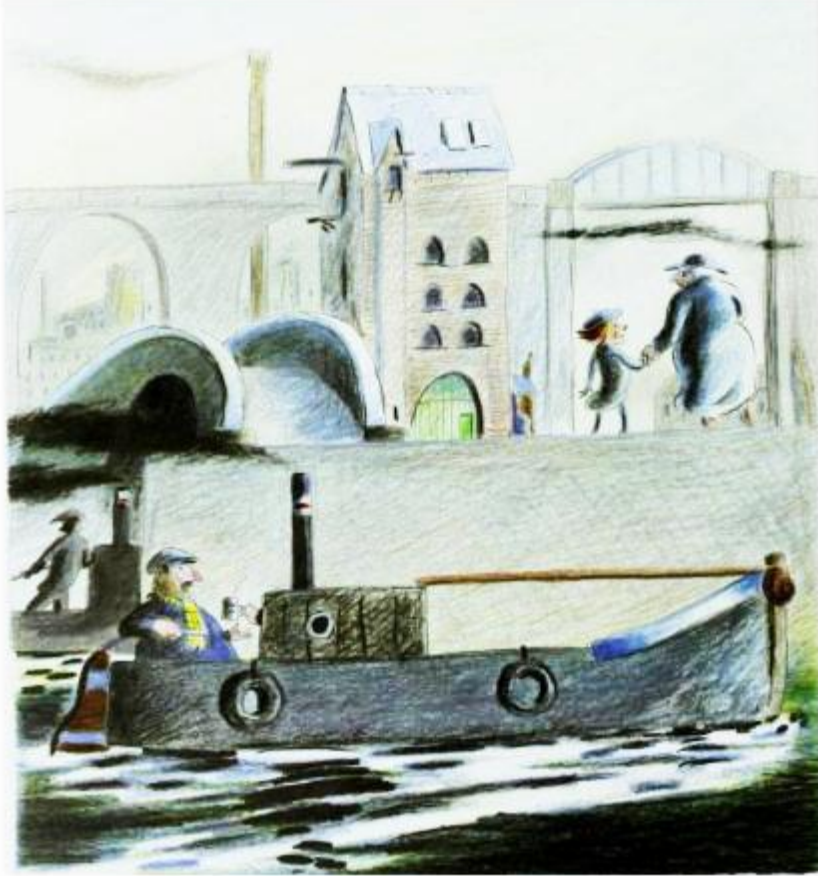
“मैं मान लेती हूँ कि आप एक परी हैं,” बैस्सी ने कहा. वह साथ-साथ पैदल चल रहे थे. “तो आप ऐसे गंदे, पुराने नगर में क्यों रहती हैं?”

“मैं सदा से यहीं रही हूँ,” मिसेज़ लीफ ने उदास आवाज़ में कहा. “परी लोक इसी पल यहीं पर है, बस तुम उसे देख नहीं सकती.” उन्होंने अपने बैग से एक सिक्का निकाला. “यह ऐसा है कि जैसे तुम इस सिक्के के एक तरफ रहती हो परियाँ दूसरी तरफ. तुम दोनों वहीं पर हैं, बस एक दूसरे को देख नहीं सकतीं.”

दोनों रुक गईं और मिसेज़ लीफ ने धरती की ओर संकेत किया. “परियाँ स्वयं कुछ नहीं बनाती इसलिए इस संसार में जहाँ पत्थर हैं वहाँ उनके संसार में घास है.” वह आगे चलती गईं. “कभी-कभी कोई परी तुम्हारे संसार में आ जाती है और अगर तुम भाग्यशाली हो तो तुम उसे देख पाती हो. लेकिन बस एक पल के लिए और सिर्फ आँख के कोने से. शायद मैं भी एक दिन इस संसार में आ गई थी और फिर वापस जाने का रास्ता ढूँढ न पाई.”

“और बतायें!” बैस्सी ने हँस दी. मिसेज़ लीफ धीरे से मुस्कराईं.

स्कूल में बैस्सी ने अपने मित्रों से पूछा कि क्या उन्हें परियों में विश्वास था. इतना पूछते ही, खेल के मैदान में सब उसका मज़ाक उड़ाने लगे थे.

बेशक किसी को परियों में विश्वास न था. उसकी बात सबको ही आश्चर्यजनक लगी थी. बैस्सी की आँखें भर आईं और वह दूसरे बच्चों से दूर रहने लगी, लेकिन ऐसा करना संभव न था. उसका मज़ाक उड़ाते और उस पर हँसते हुए, वह उसके पीछे लगे रहे. स्कूल बंद होने के बाद भी ब्लाक्लावा स्ट्रीट में उसके घर तक वह उसके पीछे आये.

विलफ्रेड गोस्लिंग ने अपने हाथ लहराये, जैसे कि वह उड़ रहा था. ऐड्ना लॉर्ड ने क्रिसमस ट्री की परी होने का नाटक किया. अपनी रुलाई को रोकते हुए बैस्सी झटपट घर के अंदर चली गई और ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर लिया.

जिस बात पर वह विश्वास करना चाहती थी, उस पर वह विश्वास क्यों नहीं कर सकती थी?

जो वह जानना चाहती थी, वह बात पूछ क्यों नहीं सकती थी?
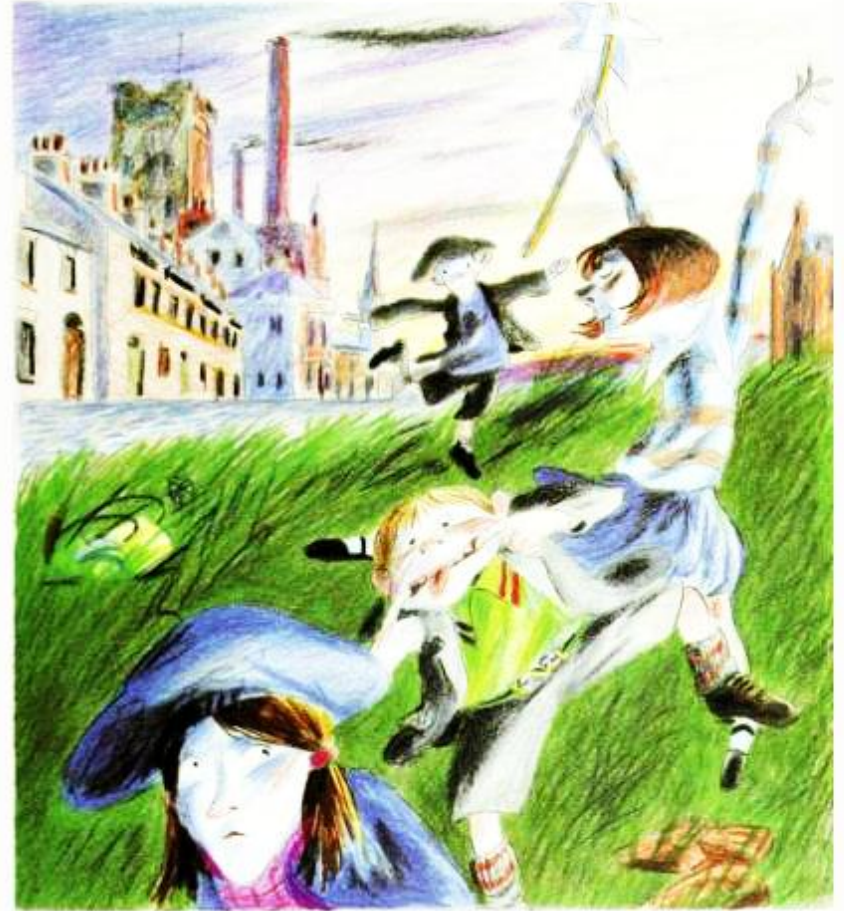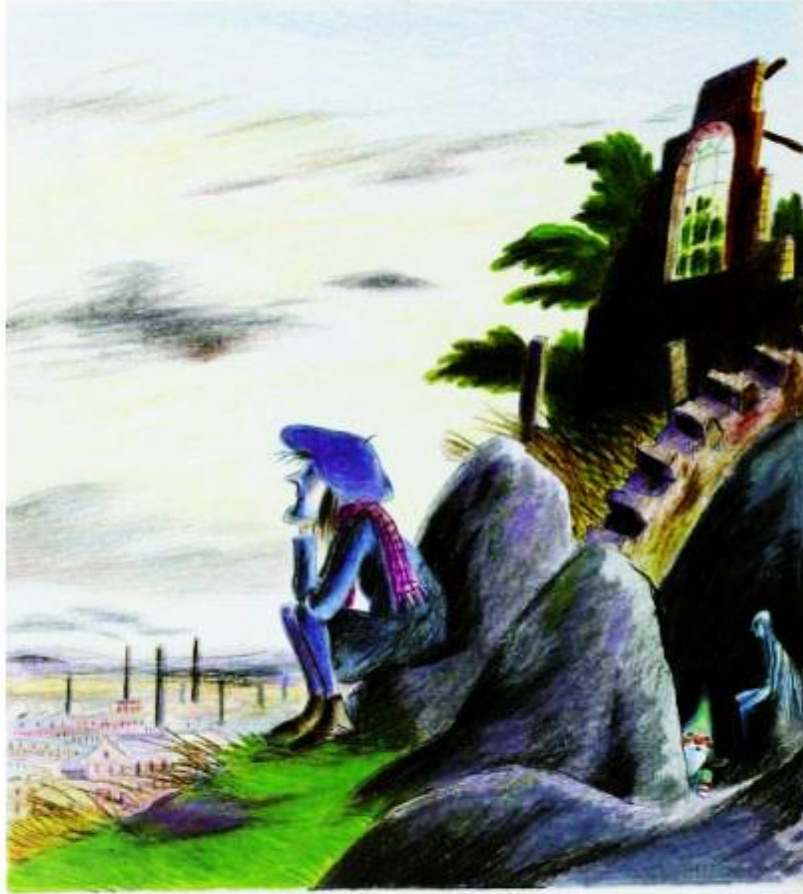
उस शाम वह नगर के पास स्थित छोटी पहाड़ी पर चढ़ गई. जहाँ वह बैठी थी वहाँ से उसके घर की छत दिखाई दे रही थी. उसे कई बातों के बारे में सोचना था. वह जानती थी कि परियाँ नहीं होतीं क्योंकि जब उसका दाँत टूट गया था तो उसकी माँ ने दाँत को सिरहाने के नीचे रखने के लिए कहा था ताकि कोई परी उसे खरीद ले. अगली सुबह सिरहाने के नीचे छह पैंस का सिक्का अवश्य था, लेकिन वह जानती थी कि सिक्का किसी परी ने नहीं रखा था, क्योंकि टिश्यू में लिपटा वह दाँत उसे बाद में माँ के गहनों के डिब्बे में मिला था.

लेकिन देखा जाये तो मिसेज़ लीफ अन्य बूढ़ी औरतों जैसी न थीं. एक तो वह थकती न थीं. दूसरे, वह बड़ी विचित्र चीज़ें खाती थीं. औरों की तरह चाय पीती और ब्रैड खाती थीं, यद्यपि कि चाय वह नल के पानी से नहीं, बारिश के पानी से बनाती थीं. उन्हें सलाद और खीरे बहुत पसंद थे, माँस नहीं खाती थीं और सब कुछ ठंडा होता था. सच में, उनकी किचन में तो चूल्हा भी न था. कभी-कभी तो वह झाड़ियों से जँगली बेर तोड़ कर खा जाती थीं.

"तुम्हें जँगली बेर कभी नहीं खाने चाहियें," उन्होंने बैस्सी को चेतावनी दी थी. "यह बौनों का खाना हैं. तुम खाओगी तो बहुत बीमार हो जाओगी, वैसे ही जैसे परियाँ मिठाई खा कर बीमार हो सकती हैं." बैस्सी ने वचन दिया कि वह कभी जँगली बेर न खायेगी.

जिस रास्ते पर उसके चाचा का घर था उस रास्ते से वह वापस चल दी. जब वह काम से लौट रहे थे, उनसे भेंट हुई. स्नान कर और कपड़े बदल कर वह कबूतरों को दाना खिलाया करते थे.

"परियाँ नहीं होती हैं, क्यों है न हैरल्ड चाचा?" उसने पूछा.

"मुझे पक्का पता नहीं, चक," उन्होंने कहा. "मैंने कोई परी देखी नहीं है, लेकिन मैंने कभी किसी कबूतर को नक्शा पढ़ते हुए नहीं देखा फिर भी वह सदा घर लौट आते हैं."

संध्या के धुंधले प्रकाश में घर लौटते हुए उसने धीमे से अपने आप से कहा, "उन्होंने वास्तव में यह नहीं कहा कि परियाँ नहीं होती हैं. ऐडना लॉर्ड सब कुछ नहीं जानती."

जैसे-जैसे सप्ताह महीनों में बदलते गए, बैस्सी और मिसेज़ लीफ के बीच दोस्ती गहरी होती गई.
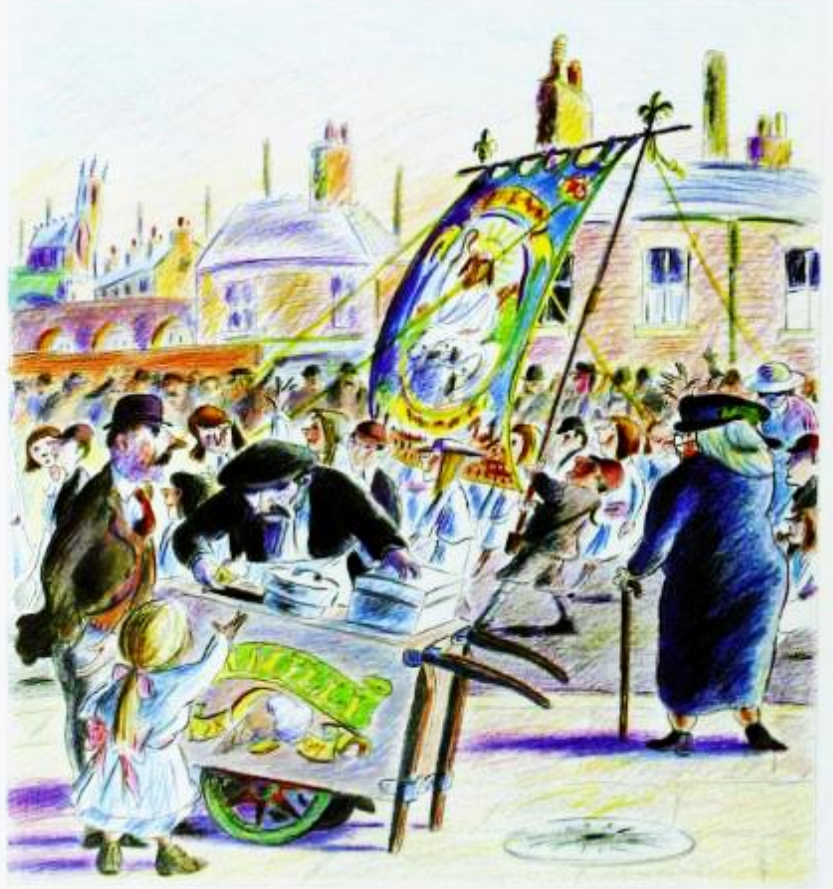
पेन्टेकोस्ट त्यौहार के अवसर पर बैस्सी ने 'संडे स्कूल वॉक' में भाग लिया. वृद्ध महिला उसे उत्साहित करने के लिए रास्ते पर खड़ी थी. इतनी गर्मी थी कि तारकोल बैस्सी के नये जूतों के तलवों से चिपक रहा था. चर्च के हॉल में चाय-नाश्ते के बाद दोनों मित्र साथ-साथ घर लौट रहे थे. उस आनंददायक दिन के बारे में उन्होंने बात कीं और बैस्सी ने कहा कि काश वह दिन कभी समाप्त न होता.

"अगर आप एक परी होतीं तो अपने जादू से इस दिन को कभी समाप्त न होने देतीं," उसने कहा.

"ईश्वर तुम्हारा भला करें, मैं ऐसा नहीं कर सकती," मिसेज़ लीफ ने कहा. "परियों के पास तुम से अधिक जादुई शक्तियाँ नहीं होतीं."

"फिर वह कुरुप से सुंदर कैसे बन जाती हैं?" बैस्सी ने झट से पूछा.

"वह जादू नहीं है, वह वैसी ही होती हैं," मिसेज़ लीफ ने बताया. "उन्हें तो लगता है कि तुम लोग जादू जानते हो."

"हम!" बैस्सी चकित रह गई. "क्यों?"

"देखो, तुम्हारा जीवन शुरु होता है तो तुम सब छोटे होते हो और, तुम्हें कैसा भी लगे, तुम बड़े हो जाते हो. उनके लिए यह जादू है. ऐसा इसलिए है क्योंकि परियाँ तुम लोगों को समझती नहीं हैं."
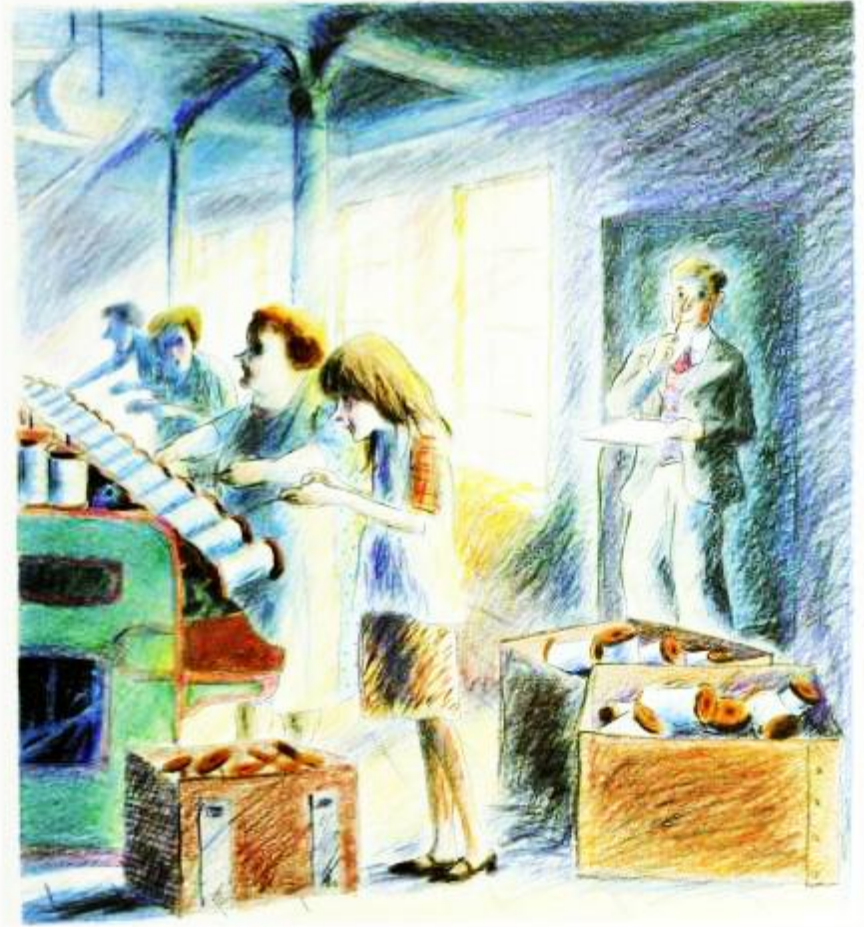
जैसे महीने वर्षों में बदले, बैस्सी का स्कूल समाप्त हो गया. वह एक मिल में काम करने लगी. मिसेज़ लीफ अभी भी उसकी सबसे अच्छी मित्र थीं हालांकि बैस्सी बड़ी हो गई थी और वह उन्हें उनके नाम से बुलाती थी...डैज़ी.

और कभी-कभी वह दोनों बीते दिनों की बातें करतीं और याद करतीं कि किस तरह डैज़ी प्रयास करती थी कि बैस परियों में विश्वास करने लगे.

"और आश्चर्य की बात यह है," बैस ने सोचा, "कि जितनी बूढ़ी डैज़ी उस दिन थी जब पहली बार मैंने उन्हें देखा था, उससे अधिक बूढ़ी नहीं लगती हैं."

फिर बैस रोबर्ट से मिली. वह भी मिल में काम करता था, लेकिन मशीन पर नहीं. वह मुख्य कार्यालय में था.

रोबर्ट को डैज़ी अच्छी लगी और वह अकसर कहता कि वह और बैस बहनों जैसी लगती थीं. वसंत में बैस और रोबर्ट का विवाह हो गया. ब्लाक्लावा स्ट्रीट में स्थित बैस के पुराने घर में वह दोनों रहने लगे.

विवाह की आश्चर्यजनक बात यह थी कि विवाह की किसी तस्वीर में डैज़ी दिखाई न दे रही थी. जिस तस्वीरों में उसे होना चाहिए था वहाँ उसकी जगह पर धब्बा सा बन गया था.

रोबर्ट हँस कर बोला कि जिन तस्वीरों के साथ उसका कुछ लेना-देना होता था उन में कोई न कोई गड़बड़ हो ही जाती थी.

तीनों ने एक साथ मिलकर बहुत अच्छा समय बिताया. गर्मियों में छुट्टियाँ मनाने वह समुद्र किनारे भी गए. डैज़ी उनके परिवार की सदस्य जैसी ही बन गई थी.
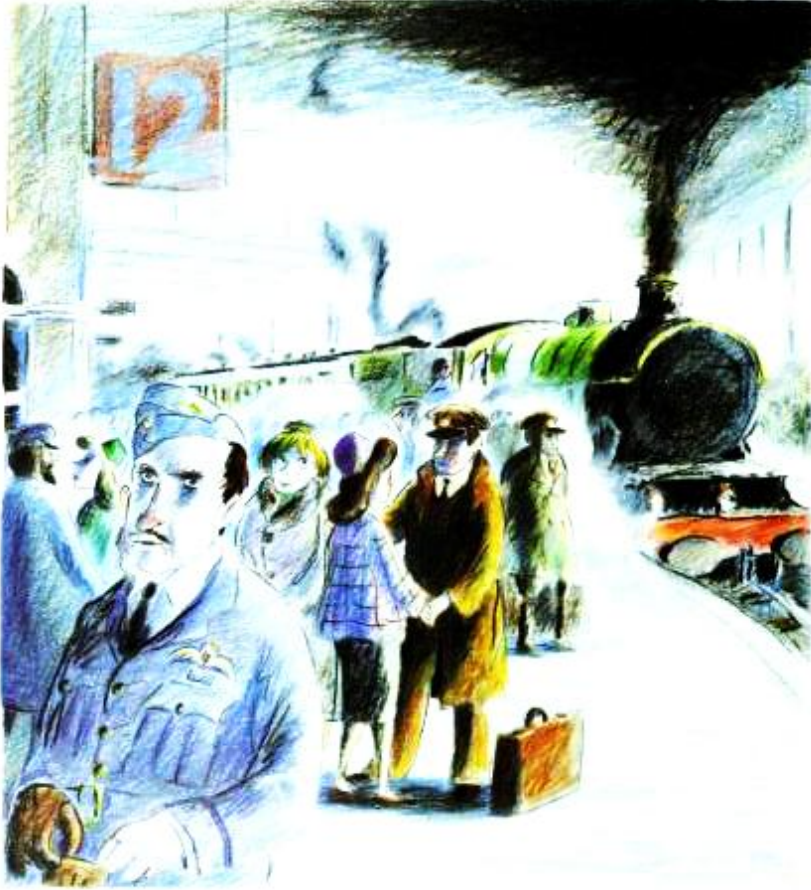
छह सुखद वर्षों के बीतने के बाद घोषणा हुई की युद्ध शुरु हो गया था. रोबर्ट तुरंत सेना में भर्ती हो गया. बैस नहीं चाहती थी कि वह भर्ती हो, लेकिन उसने कहा कि यह सही निर्णय था. रोबर्ट के लदंन जाते समय वह सब स्टेशन आये. विदाई की घड़ी में बैस अपने आँसू रोक न पाई. रोबर्ट ने वचन दिया कि बीच-बीच में वह उसे पत्र लिखेगा. बैस खुश थी कि डैज़ी उसके साथ थी. रोबर्ट के बिना वह बहुत अकेली पड़ गई थी.

अगले कुछ महीनों में रोबर्ट के कई पत्र आए, कुछ पत्र सागर पार से भी आए. फिर अचानक पत्र आने बंद हो गए और सूचना मिली कि रोबर्ट कभी लौट कर न आएगा. डाक द्वारा एक पदक मिला जिस पर उसका नाम खुदा था. पर उससे बैस को ढाढ़स न मिला. वह बहुत ही दुःखी थी.

वर्ष बीते और, जैसा डैज़ी ने से कहा था, रोबर्ट को लेकर बैस की उदासी धीरे-धीरे सुखद स्मृतियों में बदल गई.

जैसे-जैसे बैस वृद्ध ही रही थी, डैज़ी युवा होती दिखाई पड़ रही थी. क्रिसमस की एक रात, जब वह टीवी देख रहे थे, बैस ने अपनी मित्र को चुपके से देखा. उसे लगा कि टीवी शो में दिखाई दे रही लड़की से डैज़ी अधिक सुंदर लग रही थी.

अभी भी वह ब्लाक्लावा स्ट्रीट पर, पुराने दिनों की तरह, वृद्ध महिला और छोटी लड़की समान, एक साथ सैर करती हैं. बैस को इस बात का ख्याल ही नहीं आता कि छोटी डैज़ी कितनी सुंदर दिखती है. शायद एक-दूसरे में आए बदलाव की ओर पुराने मित्रों का ध्यान ही नहीं जाता.

हालांकि कभी-कभी वृद्ध बैस को पुरानी बातें याद आ जाती हैं. परियों के बारे में...कि जब वह प्रसन्न होती हैं तो वह छोटी और बहुत सुंदर दिखती हैं...ऐसी ही कुछ बेकार बातें...हालांकि वह जानती थी कि यह सच नहीं था... वह सदा से जानती थी.

**समाप्त**